दिनांक :- 13-04-2020

कॉलेज का नाम:- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

स्नातक : प्रथम खंड प्रतिष्ठा इतिहास
प्रथम पत्र
इकाई : दो - सिंधु घाटी की सभ्यता

सिंधु सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल से संबद्ध है। आद्य ऐतिहासिक काल उस काल को कहा जाता है जिसमें लिखित साक्ष्य का अभाव हो ! चूंकि हड़प्पा लिपी को पढ़ा नहीं जा सका है ! अतः इसे भी आद्य ऐतिहासिक काल में ही रखा जाता है !

अध्ययन के स्त्रोत

पुरातात्विक स्त्रोत:-

टेरी कोटा फिगर्स (मृण्मूर्तियाँ) चक्र की आकृति

महल और खण्डहर मेसोपोटामिया से प्राप्त बेलनाकार मुहर

लोथल से प्राप्त एक छोटी बेलनाकार मुहर 2350 ई० पूर्व की मेसोपोटामिया की मुहर

मोहन जोदड़ो से प्राप्त एक बाट लोथल से प्राप्त हाथी दांत के माप का पैमाना।

धौलावीरा से प्राप्त एक चित्राक्षर लेख।

अध्ययन के स्रोत के रूप में साहित्यिक साक्ष्य अनुपलब्ध है।

खोज —

सर्वप्रथम चार्ल्स मैसेन ने 1872 में हड़प्पा नामक स्थल पर एक प्राचीन सभ्यता के दबे होने की बात लिखी। यद्यपि 1853-56 में भारतीय पुरातत्व विभाग के कनिंघम ने यहाँ का अवलोकन किया परंतु इस प्रकार से इस स्थल का महत्व नहीं समझा जा सका।

1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देश में इस स्थल का खनन हुआ। सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थल की खुदाई होने के कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से पुकारा जाता है परंतु इस उत्खनन से इस सभ्यता के नागरीकरण के चरण का ही ज्ञान हो पाया है। अतः सभ्यता के उद्भव के संबंध में अनिश्चितता बनी रही। इसी परिप्रेक्ष्य में उद्भव के संबंध में अनेक

मत सामने आये। जैसे- मेसोपोटामिया के प्रभाव से :- इस विचार के प्रवर्तक है - मार्टीमर व्हीलर, गार्डन चाइल्ड, लियोनार्ड वूली, डी-डी कोसावी क्रेमर आदि -

पक्ष मे :- क्रेमर के अनुसार लगभग 2400 ईसा पूर्व मे मेसोपोटामिया से लोग आए और उन्होंने यहाँ की परिस्थिति के अनुकूल अपनी संस्कृति मे परिवर्तन कर सिंधु सभ्यता का निर्माण किया।

कोशांबी का तो यहाँ तक कहना है कि मिस्र, मेसोपोटामिया और सिंधु सभ्यता के जनक एवं एकही मूल के व्यक्ति थे।

विपक्ष मे :- मेसोपोटामिया मे स्पष्ट रूप से पुरोहितो का शासन था जबकि हड़प्पा सभ्यता के संबंध मे स्पष्ट जानकारी नही है। मेसोपोटामिया तथा हड़प्पा की लिपी मे भी अंतर है क्योंकि हड़प्पा सभ्यता की लिपी चित्राक्षर है जबकि मेसोपोटामिया की लिपी कीलनुमा है।

सिंधु सभ्यता के बड़े पैमाने पर पकी ईंटों का प्रयोग हुआ है जबकि मेसोपोटामिया में यह स्पष्ट नहीं है। हड़प्पाई शहर नियोजित हैं जबकि मेसोपोटामिया के शहर अव्यवस्थित रूप में निर्मित हैं तथा हड़प्पा की जल निकास प्रणाली भी मेसोपोटामिया की तुलना में सुनियोजित है।

व्यापार वाणिज्य के जो प्रमाण मिलते हैं उससे ज्ञात होता है कि व्यापार संतुलन हड़प्पा के पक्ष में था जो शायद किसी भी उपनिवेश का लक्षण नहीं है।

दूसरी विचारधारा :- ईरानी-बलूची ग्रामीण संस्कृति में उत्पत्ति

प्रवर्तक - फेयर सर्विस, रोमिला थापर, आदि।

इस मत के अनुसार बलूची-ईरानी संस्कृति इसका प्रमुख आधार था जिसके कारण इस संस्कृति की दिशा में तीव्र विस्तार हुआ

तीसरी विचारधारा :- देशी प्रभाव से (सोथी संस्कृति)

प्रवर्तक - अमलानंद घोष, धर्मपाल अग्रवाल, ब्रिजेट ऑल्चिन आदि।

Scanned with CamScanner

कुछ विद्वान सिंधु घाटी की सभ्यता का विकास भारत की धरती पर मानते हैं। राजस्थान के कुछ भागों में प्राक् हड़प्पाकालीन मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं।

अमलानंद घोष ने 1953 ई० में सर्वप्रथम बीकानेर क्षेत्र में सोथी संस्कृति की खोज की।

धर्मपाल अग्रवाल, ब्रिजेट आल्चीन, रेमण्ड ऑलचीन आदि विद्वानों ने यह धारणा प्रकट की है कि सिंधु सभ्यता का प्रारंभिक आधार सोथी संस्कृति में ही खोजा जा सकता है। धर्मपाल अग्रवाल के अनुसार ग्रामीण सोथी संस्कृति का ही नागरिक रूप सिंधु सभ्यता है।

बहुमान्य मत है कि हड़प्पा सभ्यता का उद्भव अचानक नहीं बल्कि क्रमिक एवं दीर्घीकृत है।

तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के पहले बहुत से छोटे-छोटे गाँव बलूचिस्तान एवं अफगानिस्तान में बस गए। बलूचिस्तान में किली गुल मुहम्मद और अफगानिस्तान में मुंडीगाक और बलूचिस्तान के मेहरगढ़ नामक स्थान पर 5000 ईसा पूर्व के लगभग कृषि के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

Scanned with CamScanner